SAMPLE QUESTION PAPER - 5
Hindi Core (302)
Class XII (2024-25)

निर्धारित समय: 3 hours **अधिकतम अंक: 80**

सामान्य निर्देश:

- निम्नलिखित निर्देशों को बहुत सावधानी से पढ़िए और उनका पालन कीजिए :-
- यह प्रश्न-पत्र तीन खण्डों में विभाजित है।
- खंड - क में अपठित बोध पर आधारित प्रश्न पूछे गए हैं। सभी प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।
- खंड - ख में पाठ्यपुस्तक अभिव्यक्ति और माध्यम से प्रश्न पूछे गए हैं। प्रश्नों में आंतरिक विकल्प दिए गए हैं।
- खंड - ग में पाठ्यपुस्तक आरोह तथा वितान से प्रश्न पूछे गए हैं। प्रश्नों में आंतरिक विकल्प दिए गए हैं।
- तीनों खंडों के प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।
- यथासंभव तीनों खंडों के प्रश्नों के उत्तर क्रमशः लिखिए।

खंड क (अपठित बोध)

1. **निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए- (10)** **[10]**

जब समाचार-पत्रों में सर्वसाधारण के लिए कोई सूचना प्रकाशित की जाती है, तो उसको विज्ञापन कहते हैं। यह सूचना नौकरियों से संबंधित हो सकती है, खाली मकान को किराए पर उठाने के संबंध में हो सकती है या किसी औषधि के प्रचार से संबंधित हो सकती है। कुछ लोग विज्ञापन के आलोचक हैं। वे इसे निरर्थक मानते हैं। उनका मानना है कि यदि कोई वस्तु यथार्थ रूप में अच्छी है, तो वह बिना किसी विज्ञापन के ही लोगों के बीच लोकप्रिय हो जाएगी, जबकि खराब वस्तुएँ विज्ञापन की सहायता पाकर भी भंडाफोड़ होने पर बहुत दिनों तक टिक नहीं पाएँगी, परंतु लोगों की यह सोच गलत है।

आज के युग में मानव का प्रचार-प्रसार का दायरा व्यापक हो चुका है। अतः विज्ञापनों का होना अनिवार्य हो जाता है। किसी अच्छी वस्तु की वास्तविकता से परिचय पाना आज के विशाल संसार में विज्ञापन के बिना नितांत असंभव है। विज्ञापन ही वह शक्तिशाली माध्यम है, जो हमारी जरूरत की वस्तुएँ प्रस्तुत करता है, उनकी माँग बढ़ाता है और अंततः हम उन्हें जुटाने चल पड़ते हैं। यदि कोई व्यक्ति या कंपनी किसी वस्तु का निर्माण करती है, उसे उत्पादक कहा जाता है। उन वस्तुओं और सेवाओं को खरीदने वाला उपभोक्ता कहलाता है। विज्ञापन इन दोनो को जोड़ने का कार्य करता है। वह उत्पादक को उपभोक्ता के संपर्क में लाता है तथा माँग और पूर्ति में संतुलन स्थापित करने का प्रयत्न करता है। पुराने जमाने में किसी वस्तु की अच्छाई का विज्ञापन मौखिक तरीके से होता था। काबुल का मेवा, कश्मीर की जरी का काम, दक्षिण भारत के मसाले आदि वस्तुओं की प्रसिद्धि मौखिक रूप से होती थी। उस समय आवश्यकता भी कम होती थी तथा लोग किसी वस्तु के अभाव की तीव्रता का

अनुभव नहीं करते थे। आज समय तेजी का है। संचार-क्रांति ने जिंदगी को स्पीड दे दी है। मनुष्य की आवश्यकताएँ बढ़ती जा रही हैं, इसलिए विज्ञापन मानव-जीवन की अनिवार्यता बन गया है।

(i) विज्ञापन का मुख्य उद्देश्य क्या है? (1)
क) वस्तुओं का निर्माण करना
ख) वस्तुओं को खरीदना
ग) उत्पादक और उपभोक्ता को जोड़ना
घ) वस्तुओं का भंडारण करना

(ii) पुराने जमाने में वस्तुओं की अच्छाई का विज्ञापन कैसे होता था? (1)
क) समाचार-पत्रों के माध्यम से
ख) मौखिक तरीके से
ग) टेलीविजन पर
घ) रेडियो पर

(iii) विज्ञापन के आलोचक क्या मानते हैं? (1)
क) विज्ञापन आवश्यक है
ख) विज्ञापन निरर्थक है
ग) विज्ञापन वस्तुओं की माँग बढ़ाता है
घ) विज्ञापन शक्तिशाली माध्यम है

(iv) पुराने समय में काबुल के मेवे और कश्मीर की जरी का काम कैसे प्रसिद्ध होता था? (1)
(v) विज्ञापन क्यों अनिवार्य हो गया है? (2)
(vi) विज्ञापन किस प्रकार उत्पादक और उपभोक्ता को जोड़ने का कार्य करता है? (2)
(vii) आज के युग में विज्ञापन का क्या महत्व है? (2)

2. **निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए-** **[8]**

माना आज मशीनी युग में, समय बहुत महँगा है लेकिन
तुम थोड़ा अवकाश निकाली, तुमसे दो बातें करनी हैं।
उम्र बहुत बाकी है, लेकिन, उम्र बहुत छोटी भी तो है
एक स्वप्न मोती का है तो, एक स्वप्न रोटी भी तो है
घुटनों में माथा रखने से पोखर पार नहीं होता है:
सोया है विश्वास जगा लो, हम सबको नदिया तरनी है!
तुम थोड़ा अवकाश निकाली, तुम से दो बातें करनी हैं!
मन छोटा करने से मोटा काम नहीं छोटा होता है,
नेह-कोष को खुलकर बाँटो, कभी नहीं टोटा होता है,
आँसू वाला अर्थ न समझे, तो सब ज्ञान व्यर्थ जाएँगे:

मत सच का आभास दबा लो, शाश्वत आग नहीं मरनी है!
तुम थोड़ा अवकाश निकाली, तुमसे दो बातें करनी हैं।

(i) कविता में 'उम्र बहुत छोटी भी तो है' का क्या तात्पर्य है? (1)

क) जीवन का समय सीमित है
ख) जीवन बहुत लंबा है
ग) जीवन का कोई अर्थ नहीं है
घ) जीवन में बहुत कुछ हासिल करना है

(ii) 'घुटनों में माथा रखने से पोखर पार नहीं होता है' पंक्ति से कवि का क्या अभिप्राय है? (1)

क) ध्यान और प्रार्थना से सब कुछ संभव है
ख) केवल चिंतन और निराशा से समस्याओं का समाधान नहीं होता
ग) मेहनत से ही सफलता मिलती है
घ) किसी भी कार्य के लिए सहायता की आवश्यकता होती है

(iii) 'नेह-कोष को खुलकर बाँटो' पंक्ति में 'नेह-कोष' का क्या अर्थ है? (1)

क) धन
ख) प्रेम और स्नेह
ग) ज्ञान
घ) अनुभव

(iv) मशीनी युग में समय महँगा होने का क्या तात्पर्य है? (1)
(v) 'तुम थोड़ा अवकाश निकाली, तुमसे दो बातें करनी हैं' इस पंक्ति में कवि किससे और क्यों बात करना चाहते हैं? (2)
(vi) मन और स्नेह के बारे में कवि क्या परामर्श दे रहा है और क्यों? (2)

खंड- ख (अभिव्यक्ति और माध्यम पाठ्यपुस्तक के आधार पर)

3. **दिए गए तीन विषयों में से किसी एक विषय पर आधारित लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेखन लिखिए।** **[6]**

(i) **बढ़ती जनसंख्या की समस्या** विषय पर निबंध लिखिए। **[6]**

(ii) **हड़तालें : देश की प्रगति में बाधक** विषय पर निबंध लिखिए। **[6]**

(iii) **हमारी सीमाओं के प्रहरी** विषय पर निबंध लिखिए। **[6]**

4. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये: (2 X 4 = 8)** **[8]**

(i) उलटा पिरामिड शैली का विकास कहाँ और क्यों हुआ? **[2]**

(ii) **धनोपार्जन के मूल्यहीन तरीके** पर एक फीचर लिखिए। **[2]**

(iii) लोकतंत्र में जनसंचार के दो कार्यों का उल्लेख कीजिए। **[2]**

(iv) नाटक को एक निश्चित समय-सीमा के भीतर क्यों पूरा होना होता है? कारणों का उल्लेख कीजिए। **[2]**

5. **निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये: (4 X 2 = 8)** **[8]**

(i) विशेष लेखन के लिए सूचनाओं के स्रोत्र कौन से होते हैं? **[4]**

(ii) फ़ीचर कैसे लिखे जाते हैं? अच्छे फ़ीचर की विशेषताएँ लिखिए। **[4]**

(iii) संपादकीय लेखन क्या है? इसके विषय में बताते हुए संपादकीय लेखन की किन्हीं तीन प्रमुख विशेषताओं का उल्लेख कीजिए। **[4]**

खंड- ग (आरोह भाग - 2 एवं वितान भाग-2 पाठ्यपुस्तकों के आधार पर)

6. **अनुच्छेद को ध्यानपूर्वक पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये:** **[5]**

मैं निज उर के उद्गार लिए फिरता हूँ
मैं निज उर के उपहार लिए फिरता हूँ;
है यह अपूर्ण संसार न मुझको भाता
मैं स्वप्नों का संसार लिए फिरता हूँ।
मैं जला हृदय में अग्नि, दहा करता हूँ,
सुख-दुःख दोनों में मग्न रहा करता हूँ;
जग भव-सागर तरने को नाव बनाए,
मैं भव मौजों पर मस्त बहा करता हूँ।

(i) **निज उर के उद्गार** से कवि का क्या तात्पर्य है?

क) अपने हृदय से निकाल दी गई स्मृतियाँ
ख) अपने हृदय की वाणी की अभिव्यक्ति
ग) अपने हृदय से भिन्न मनोभाव
घ) अपने हृदय के केवल दुःख

(ii) कवि को संसार प्रिय क्यों नहीं है?

क) संसार की समान स्थिति के कारण
ख) संसार के बदलाव के कारण
ग) संसार की अपूर्णता के कारण
घ) सभी विकल्प सही हैं

(iii) कवि के हृदय में कैसी अग्नि दहक रही है?

क) सभी कुछ नष्ट कर देने वाली अग्नि
ख) ईष्र्या-द्वेष से पूर्ण अग्नि

ग) स्वयं को जलाने वाली विरहाग्नि घ) स्नेहरूपी अग्नि

(iv) **मैं भव-मौजों पर मस्त बहा करता हूँ** पंक्ति में **भव-मौजो** से क्या अभिप्राय है?

क) संसार की लहरें ख) विचारों की मस्ती

ग) संसार की संकीर्णता घ) भावों की लहरें

(v) कवि किसकी अपेक्षा नहीं करता है?

क) विचारों की ख) घृणा की

ग) साधनों की घ) प्रेम की

7. **निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये:** **[6]**

(i) **'बगुलों के पंख'** कविता के सौंदर्य पर प्रकाश डालिए। **[3]**

(ii) तुलसीदास ने पेट की आग को **समुद्र की आग से बड़ी क्यों** कहा है? कवितावली पाठ के आधार पर लिखिए। **[3]**

(iii) **भाषा को सहूलियत** से बरतने से क्या अभिप्राय है? बात सीधी थी पर कविता के आधार पर बताइए। **[3]**

8. **निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये:** **[4]**

(i) पतंग लूटने में खतरनाक परिस्थितियों का सामना करके बच्चे चुनौतियों का सामना करना सीखते हैं- इस कथन पर अपने विचार व्यक्त कीजिए। **[2]**

(ii) **कैमरे में बंद अपाहिज** कविता के आधार पर सिद्ध कीजिए कि कविता संवेदनहीन सूचना तंत्र पर एक व्यंग्य है। **[2]**

(iii) कृषक अधीर होकर बादल को क्यों बुलाता है? **बादल राग** कविता के आधार पर लिखिए। **[2]**

9. **अनुच्छेद को ध्यानपूर्वक पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये:** **[5]**

मेरा आदर्श समाज स्वतंत्रता, समता, भ्रातृता पर आधारित होगा। क्या यह ठीक नहीं है, भ्रातृता अर्थात् भाईचारे में किसी को क्या आपत्ति हो सकती है? किसी भी आदर्श समाज में इतनी गतिशीलता होनी चाहिए, जिससे कोई भी वांछित परिवर्तन समाज के एक छोर से दूसरे तक संचारित हो सके। ऐसे समाज के बहुविध हितों में सबका भाग होना चाहिए तथा सबको उनकी रक्षा के प्रति सजग रहना चाहिए। सामाजिक जीवन में अबाध संपर्क के अनेक साधन व अवसर उपलब्ध रहने चाहिए। तात्पर्य यह है कि दूध और पानी के मिश्रण की तरह भाईचारे का यही वास्तविक रूप है और इसी का दूसरा नाम लोकतंत्र है, क्योंकि लोकतंत्र केवल शासन की एक पद्धति ही नहीं है, लोकतंत्र मूलतः सामूहिक जीवनचर्या की एक रीति तथा

समाज के सम्मिलित अनुभवों के आदान-प्रदान का नाम है। इनमें यह आवश्यक है कि अपने साथियों के प्रति श्रद्धा व सम्मान का भाव हो। (बाबा साहेब भीमराव आंबेडकर)

(i) लेखक के अनुसार एक आदर्श समाज के लिए क्या अपेक्षित है?

क) स्वतंत्रता
ख) गतिशीलता
ग) लोकतंत्र
घ) समानता

(ii) सबको किनकी रक्षा के प्रति सजग रहना चाहिए?

क) स्वयं की
ख) सरकार की
ग) लोकतंत्र की
घ) दलितों की

(iii) भाईचारे के वास्तविक रूप को क्या कहा जाता है?

क) दूध
ख) समाज
ग) पानी
घ) लोकतंत्र

(iv) निम्नलिखित कथन (A) तथा कारण (R) को ध्यानपूर्वक पढ़िए। उसके बाद दिए गए विकल्पों में से कोई एक सही विकल्प चुनकर लिखिए।
कथन (A): लोकतंत्र सामूहिक जीवनचर्या की एक रीति है ।
कारण (R): क्योंकि लोकतंत्र केवल शासन की एक पद्धति नहीं है ।

क) कथन (A) गलत है लेकिन कारण (R) सही है।
ख) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों गलत हैं।
ग) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं तथा कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या करता है।
घ) कथन (A) सही है लेकिन कारण (R) उसकी गलत व्याख्या करता है।

(v) गद्यांश के आधार पर निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए-
i. लोकतंत्र केवल शासन की एक पद्धति है।
ii. आदर्श समाज में गतिशीलता नहीं होनी चाहिए।
iii. लोकतंत्र में अपने साथियों के प्रति श्रद्धा और सम्मान का भाव होना चाहिए।
उपरिलिखित कथनों में से कौन सही नहीं है/हैं?

क) ii और iii
ख) केवल iii
ग) i और ii
घ) i और iii

10. **निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये:** **[6]**

(i) **पहलवान की ढोलक** पाठ के आधार पर बताइए कि चाँद सिंह नामक पहलवान को चित्त करने के बाद लुट्टन के जीवन में क्या परिवर्तन आ गया। **[3]**

(ii) भक्तिन को दुर्भाग्यवान क्यों कहा गया है? **[3]**

(iii) **शिरीष के फूल** पाठ के अनुसार लेखक के मत और पुराने कवि के मतों में क्या अंतर है? **[3]**

11. **निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये:** **[4]**

(i) **पैसा पावर है**- लेखक जैनेंद्र कुमार ने ऐसा क्यों कहा? **[2]**

(ii) **काले मेघा पानी दे** पाठ में मेढक मंडली पर लोगों द्वारा सहेजे गए पानी को फेंकने को पानी की निर्मम बरबादी क्यों कहा गया है? **[2]**

(iii) डॉ. आंबेडकर समता को काल्पनिक वस्तु क्यों मानते हैं? **[2]**

12. **निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये:** **[10]**

(i) **सिल्वर वैडिंग** वर्तमान युग में बदलते जीवन-मूल्यों की कहानी है। सोदाहरण स्पष्ट कीजिए। **[5]**

(ii) कहानीकार के शिक्षित होने के संघर्ष में दत्ता जी राव देसाई के योगदान को **जूझ** कहानी के आधार पर स्पष्ट कीजिए। **[5]**

(iii) पुरातत्त्व के किन चिह्नों के आधार पर आप यह कह सकते हैं कि- सिंधु-सभ्यता ताकत से शासित होने की अपेक्षा समझ से अनुशासित सभ्यता थी। **[5]**

Solution

SAMPLE QUESTION PAPER - 5

Hindi Core (302)

Class XII (2024-25)

खंड क (अपठित बोध)

1. (i) ग) उत्पादक और उपभोक्ता को जोड़ना

(ii) ख) मौखिक तरीके से

(iii) ख) विज्ञापन निरर्थक है

(iv) पुराने समय में काबुल के मेवे और कश्मीर की जरी का काम मौखिक रूप से प्रसिद्ध होता था।

(v) आज के युग में मानव का प्रचार-प्रसार का दायरा व्यापक हो चुका है और किसी अच्छी वस्तु की वास्तविकता से परिचय पाना विशाल संसार में विज्ञापन के बिना नितांत असंभव है, इसलिए विज्ञापन अनिवार्य हो गया है।

(vi) विज्ञापन उत्पादक को उपभोक्ता के संपर्क में लाता है तथा माँग और पूर्ति में संतुलन स्थापित करने का प्रयत्न करता है।

(vii) आज के युग में विज्ञापन आवश्यकताओं को प्रस्तुत करता है, उनकी माँग बढ़ाता है और लोगों को उन्हें जुटाने के लिए प्रेरित करता है।

2. (i) क) जीवन का समय सीमित है

(ii) ख) केवल चिंतन और निराशा से समस्याओं का समाधान नहीं होता

(iii) ख) प्रेम और स्नेह

(iv) इस युग में व्यक्ति समय के साथ बँध गया है। उसे हर घंटे के हिसाब से मजदूरी मिलती है।

(v) 'तुम थोड़ा अवकाश निकाली, तुमसे दो बातें करनी हैं' में कवि अपने साथी या प्रियजन से बात करना चाहते हैं, ताकि वे जीवन की सच्चाई, संघर्षों, और समय की महत्ता के बारे में चर्चा कर सकें। कवि चाहता है कि व्यक्ति जीवन के महत्वपूर्ण मुद्दों पर ध्यान दें और उनसे निपटने के लिए समय निकालें।

(vi) मन के बारे में कवि का मानना है कि मनुष्य को हिम्मत रखनी चाहिए। हौसला खोने से बाधा खत्म नहीं होती। स्नेह भी बाँटने से कभी कम नहीं होता। कवि मनुष्य को मानवता के गुणों से युक्त होने के लिए कह रहा है।

खंड- ख (अभिव्यक्ति और माध्यम पाठ्यपुस्तक के आधार पर)

3. दिए गए तीन विषयों में से किसी एक विषय पर आधारित लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेखन लिखिए।

(i) **बढ़ती जनसंख्या की समस्या**

परिचय: भारत में बढ़ती जनसंख्या एक गंभीर समस्या बन चुकी है। यह समस्या देश के विकास और संसाधनों पर भारी दबाव डाल रही है। इस निबंध में हम बढ़ती जनसंख्या के कारण, प्रभाव और समाधान पर चर्चा करेंगे।

बढ़ती जनसंख्या के कारण:

अशिक्षा: शिक्षा की कमी के कारण लोग परिवार नियोजन के महत्व को नहीं समझ पाते।

गरीबी: गरीब परिवारों में अधिक बच्चे होने की प्रवृत्ति होती है, क्योंकि उन्हें लगता है कि अधिक बच्चे होने से उनकी आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

स्वास्थ्य सेवाओं की कमी: स्वास्थ्य सेवाओं की कमी के कारण नवजात शिशुओं की मृत्यु दर अधिक होती है, जिससे लोग अधिक बच्चे पैदा करने की कोशिश करते हैं।

सामाजिक और धार्मिक मान्यताएँ: कुछ सामाजिक और धार्मिक मान्यताएँ भी अधिक बच्चों को जन्म देने को प्रोत्साहित करती हैं|

बढ़ती जनसंख्या के प्रभाव:

संसाधनों पर दबाव: बढ़ती जनसंख्या के कारण जल, भोजन, और ऊर्जा जैसे प्राकृतिक संसाधनों पर भारी दबाव पड़ता है।

बेरोजगारी: जनसंख्या वृद्धि के साथ रोजगार के अवसरों की कमी होती है, जिससे बेरोजगारी बढ़ती है।

गरीबी: अधिक जनसंख्या के कारण गरीबी की समस्या और भी गंभीर हो जाती है।

शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं की कमी: बढ़ती जनसंख्या के कारण शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं की गुणवत्ता में गिरावट आती है।

बढ़ती जनसंख्या के समाधान:

शिक्षा का प्रसार: शिक्षा के माध्यम से लोगों को परिवार नियोजन के महत्व के बारे में जागरूक किया जा सकता है।

स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार: स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार करके नवजात शिशुओं की मृत्यु दर को कम किया जा सकता है।

परिवार नियोजन कार्यक्रम: सरकार को परिवार नियोजन कार्यक्रमों को बढ़ावा देना चाहिए और लोगों को इसके लाभों के बारे में जागरूक करना चाहिए।

(ii) **हड़तालें: देश की प्रगति में बाधक**

हड़तालें किसी भी लोकतांत्रिक समाज का एक महत्वपूर्ण हिस्सा होती हैं, जहाँ लोग अपने अधिकारों और मांगों के लिए आवाज उठा सकते हैं। हालांकि, जब हड़तालें अत्यधिक और अनियंत्रित हो जाती हैं, तो वे देश की प्रगति में बाधक बन सकती हैं।

हड़तालों का मुख्य उद्देश्य होता है कि श्रमिक या कर्मचारी अपने नियोक्ताओं से अपनी मांगों को मनवाने के लिए एकजुट होकर काम बंद कर दें। यह एक प्रभावी तरीका हो सकता है, लेकिन इसके दुष्परिणाम भी होते हैं। जब हड़तालें लंबी अवधि तक चलती हैं, तो इससे उत्पादन में गिरावट आती है, जिससे आर्थिक नुकसान होता है।

सरकारी कार्यालयों में हड़तालें आम बात हो गई हैं। इससे सरकारी सेवाओं में बाधा आती है और आम जनता को कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। अस्पतालों में डॉक्टरों की हड़तालें मरीजों के लिए जानलेवा साबित हो सकती है। शिक्षा संस्थानों में हड़तालें छात्रों के भविष्य को प्रभावित करती हैं और उनकी पढ़ाई में बाधा डालती हैं।

हड़तालों का एक और नकारात्मक पहलू यह है कि इससे समाज में अस्थिरता और अशांति फैलती है। जब विभिन्न वर्गों के लोग अपनी मांगों के लिए हड़ताल पर जाते हैं, तो इससे समाज में तनाव और विभाजन की स्थिति उत्पन्न होती है। इसके अलावा, हड़तालों के दौरान होने वाली हिंसा और तोड़फोड़ से सार्वजनिक संपत्ति का नुकसान होता है।

हालांकि, यह भी सच है कि हड़तालें कभी-कभी आवश्यक होती हैं। जब श्रमिकों के साथ अन्याय होता है और उनके अधिकारों का हनन होता है, तो हड़तालें एकमात्र उपाय बन जाती हैं। लेकिन

इसका उपयोग सोच-समझकर और जिम्मेदारी के साथ किया जाना चाहिए।
इस प्रकार, हड़तालें देश की प्रगति में बाधक बन सकती हैं यदि उनका उपयोग अनुचित तरीके से किया जाए। हमें यह सुनिश्चित करना चाहिए कि हड़तालें केवल तभी हों जब अन्य सभी उपाय विफल हो जाएं और उनका उद्देश्य समाज के हित में हो।

(iii) **हमारी सीमाओं के प्रहरी**

हमारी सीमाओं के प्रहरी, यानी हमारे सैनिक, देश की सुरक्षा और अखंडता के रक्षक हैं। वे दिन-रात कठिन परिस्थितियों में रहकर हमारी सीमाओं की रक्षा करते हैं। इस निबंध में हम सैनिकों के जीवन, उनके योगदान और उनके महत्व पर चर्चा करेंगे।
सैनिकों का जीवन अत्यंत कठिन और अनुशासित होता है। वे अपने परिवार से दूर, कठिन मौसम और दुर्गम स्थानों पर तैनात रहते हैं। उनका दिन सुबह जल्दी शुरू होता है और रात देर तक चलता है। वे हर समय सतर्क रहते हैं और किसी भी आपात स्थिति का सामना करने के लिए तैयार रहते हैं।
सैनिकों का योगदान केवल युद्ध के समय ही नहीं, बल्कि शांति के समय भी महत्वपूर्ण होता है। वे प्राकृतिक आपदाओं के समय राहत और बचाव कार्यों में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इसके अलावा, वे आतंकवाद और घुसपैठ जैसी समस्याओं से निपटने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।
सैनिकों का महत्व केवल उनकी वीरता और साहस में ही नहीं, बल्कि उनके अनुशासन और समर्पण में भी है। वे अपने देश के लिए अपने प्राणों की आहुति देने से भी पीछे नहीं हटते। उनकी यह भावना हमें प्रेरित करती है और हमें अपने देश के प्रति गर्व का अनुभव कराती है।
हमारी सीमाओं के प्रहरी हमारे देश के असली नायक हैं। उनका जीवन, उनका योगदान और उनका महत्व हमें यह सिखाता है कि देश की सेवा सबसे बड़ा धर्म है। हमें उनके त्याग और समर्पण का सम्मान करना चाहिए और उनके परिवारों के प्रति भी आभार व्यक्त करना चाहिए।

4. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये: (2 X 4 = 8)

(i) उल्टा पिरामिड शैली का प्रयोग 19वीं सदी के मध्य से शुरू हो गया था पर इसका विकास अमेरिका के गृहयुद्ध के दौरान हुआ था। उस समय संवाददाताओं को अपनी खबरें टेलीग्राफ संदेश के जरिये भेजनी पड़ती थी, जिसकी सेवायें अनियमित, महंगी और दुर्लभ थी। यही नहीं कई बार तकनीकी कारणों से टेलीग्राफ सेवाओं में बाधा भी आ जाती थी।

(ii) **धनोपार्जन के मूल्यहीन तरीके**

संसार में धनोपार्जन के अनेक मूल्यहीन तरीके प्रचलित हैं। अपहरण करना, किसी की हत्या की सुपारी लेना, रक्त बेचना शरीर के महत्त्वपूर्ण अंग-किडनी आदि बेचना, ठगी करना आदि धनोपार्जन के ऐसे ही कुछ मूल्यहीन तरीके हैं। अनेक स्त्रियाँ गर्भवती होने का ढोंग कर लोगों से भीख माँगती हैं। कुछ लोग जागरण के नाम पर चंदा एकत्रित करते हैं और लोगों को मूर्ख बनाते हैं। कई लोग जेब काटते हैं। इसके अतिरिक्त कुछ लोग दुकानों तथा मकानो में चोरी करते हैं। कुछ लोग सोने के नाम पर पीतल बेचकर या सामान्य चमकीले पत्थर को नागमणि कहकर बेचते हैं।
अनेक लोगों ने अवैध और मूल्यहीन तरीकों से धन कमाना अपना पेशा ही बना लेते हैं।ऐसे लोग

अन्य लोगों को धोखा देकर लाखों रुपये अर्जित कर लेते हैं।ये लोग अपने अवैध धनोपार्जन के अनेक तरीकों का ईजाद करते हैं। तथाकथित निर्मल बाबा, संत रामपाल, आसाराम आदि की तरह कुछ लोग धार्मिकता का ढोंग कर करोड़ों रुपए कमाते हैं। कुछ लोग धार्मिक प्रवचन देकर लोगो से लाखों रुपये ऐंठते हैं।

कुछ निर्धन लोग अपना रक्त बेचकर धन प्राप्त करते हैं, तो कुछ लोग अंधे होने का ढोंग कर भीख माँगकर प्रति मास हजारों रुपये अर्जित करते है। इस प्रकार हमारे समाज में अनेक लोग मूल्यहीन तरीकों से धन अर्जित करते हैं। समाज को सबसे अधिक खतरा तो उन सफ़ेदपोश लोगों से है, जो अपने ईमान को गिरवी रखकर देश व समाज को लूट रहे हैं।

ऐसे लोग कई बार सी.बी.आई. अधिकारी या पुलिस के उच्चाधिकारी होने का ढोंग करते है। कई बार ये नकली आयकर अधिकारी बनकर भी लोगों से ठगी करते हैं तथा पर्याप्त धन अर्जित करते हैं। समाज में अनेक लोग साधु, तांत्रिक आदि बनकर पर्याप्त धन अर्जित करते हैं। निर्मल बाबा जैसे व्यक्ति लोगों को मूर्ख बनाकर करोड़ों रुपये प्रतिवर्ष अर्जित कर लेते हैं। इस प्रकार अनेक लोग मूल्यहीन तरीकों से धन अर्जित करते है।

(iii)**लोकतंत्र में जनसंचार के दो कार्य निम्नलिखित हैं-**

1. **सूचित करना -** जनसंचार के प्रमुख कार्यों में से एक है जनता को देश -दुनिया की तमाम घटनाओं से अवगत कराना और तमाम समाचारों और को लोगों को सूचित करना।
2. **शिक्षित करना -** आम जनता को अनेक प्रकारों से शिक्षित करना भी जनसंचार का एक महत्वपूर्ण कार्य है । इसके अलावा लोगों को सही और गलत के बारे में बताना भी एक महत्वपूर्ण कार्य है।

(iv)नाटक मनोरंजन का एक केंद्र है। दर्शकों के लिए अधिक लंबा नाटक उबाऊ हो जाता है, जो कि दर्शक को नाटक से दूर कर सकता है। नाटक का लेखन भी समय-सीमा को देखते हुए करना चाहिए। ताकि नाटक सही समय-सीमा के अंदर समाप्त हो जाए और दर्शक भी बोरियत से बच सके। इसलिए नाटक को एक निश्चित समय-सीमा के भीतर पूरा होना होता है।

5. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये: (4 X 2 = 8)

(i) विशेष लेखन के लिए निम्नलिखित स्रोत्र होते हैं- प्रेस कान्फ्रेंस, विज्ञप्ति, साक्षात्कार, सर्वे, सरकारी -गैरसरकारी संस्थाएं, संबंधित विभाग, इंटरनेट तथा अन्य संचार माध्यम एवं स्थायी अध्ययन सामग्री अति आवश्यक होते हैं।

(ii) **फीचर-** सुव्यवस्थित, सृजनात्मक, आत्मनिष्ठ लेखन है जिसका उद्देश्य पाठकों को सूचना देना, शिक्षित करना और मनोरंजन करना है।

फीचर लेखन की कोई एक निश्चित शैली नहीं होती तथापि फीचर लेखन में कथात्मक शैली प्रमुख होती है। फीचर वैयक्तिकता पर आधारित होता है। इसका रूप सरल, रूपात्मक, आकर्षक और मन को छूने वाला होना चाहिए।

(iii)एक ऐसी कला, जिसमें किसी महत्वपूर्ण मुद्दे पर संपादक या पत्रकार अपनी राय व्यक्त करता है, संपादकीय लेखन कहलाता है। यह लेखन आमतौर पर किसी समाचार पत्र या पत्रिका में प्रकाशित होता है।

संपादकीय लेखन की तीन प्रमुख विशेषताएं:

i. **स्पष्टता:** संपादकीय लेखन में विचारों को स्पष्ट और सरल भाषा में व्यक्त करना आवश्यक है।
ii. **तर्कसंगतता:** संपादकीय लेखन में तर्कसंगत और तथ्यों पर आधारित विचारों को प्रस्तुत करना महत्वपूर्ण है।
iii. **निष्पक्षता:** संपादकीय लेखन में निष्पक्षता का पालन करना चाहिए और व्यक्तिगत पूर्वाग्रहों से बचना चाहिए।

अतिरिक्त जानकारी:

- संपादकीय लेखन का उद्देश्य पाठकों को किसी मुद्दे के बारे में सोचने और अपनी राय बनाने के लिए प्रेरित करना होता है।
- संपादकीय लेखन में विभिन्न शैलियों का उपयोग किया जा सकता है, जैसे कि तथ्यात्मक, विश्लेषणात्मक, और व्यंग्यात्मक।

खंड- ग (आरोह भाग - 2 एवं वितान भाग-2 पाठ्यपुस्तकों के आधार पर)

6. **अनुच्छेद को ध्यानपूर्वक पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये:**

मैं निज उर के उद्गार लिए फिरता हूँ
मैं निज उर के उपहार लिए फिरता हूँ;
है यह अपूर्ण संसार न मुझको भाता
मैं स्वप्नों का संसार लिए फिरता हूँ।
मैं जला हृदय में अग्नि, दहा करता हूँ,
सुख-दुःख दोनों में मग्न रहा करता हूँ;
जग भव-सागर तरने को नाव बनाए,
मैं भव मौजों पर मस्त बहा करता हूँ।

(i) **(ख)** अपने हृदय की वाणी की अभिव्यक्ति

व्याख्या:

अपने हृदय की वाणी की अभिव्यक्ति

(ii) **(घ)** सभी विकल्प सही हैं

व्याख्या:

सभी विकल्प सही हैं

(iii) **(ग)** स्वयं को जलाने वाली विरहाग्नि

व्याख्या:

स्वयं को जलाने वाली विरहाग्नि

(iv) **(क)** संसार की लहरें

व्याख्या:

संसार की लहरें

(v) **(ग)** साधनों की

व्याख्या:

साधनों की

7. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये:

(i) 'बगुलों के पंख' कविता सौंदर्य से परिपूर्ण है। कवि ने चित्रात्मक वर्णन के माध्यम से प्रकृति के सौंदर्य का अपेक्षित प्रभाव वर्णित किया है। यह चित्र तथा उसके मन पर पड़ने वाला प्रभाव ही कविता का वर्ण्य-विषय बन गया है। वस्तुगत तथा आत्मगत प्रवृत्तियों के संयोग पाठक को सौंदर्य के स्वाभाविक संसार में प्रवेश दिलाते हैं।
कवि काले बादलों से भरे आकाश में पंक्तिबद्ध उड़ते सफ़ेद बगुलों को देखता है। वे कजरारे बादलों के ऊपर तैरती साँझ की श्वेत काया के समान प्रतीत होते हैं। कवि को यह अलौकिक सौंदर्य इतना मोहित कर देता है कि वह सब कुछ भूल कर इस माया से बंध जाता है।

(ii) शरीर को चलाने के लिए पेट भरा होना आवश्यक है। इसे भरने के लिए अनेक कर्म करने पड़ते हैं। भिखारी से लेकर बड़े-बड़े लोग भी पेट की आग को शांत करने के लिए कर्म करते रहते हैं। पेट की आग को बडवाग्नि कहते हैं। इसे प्रयत्न द्वारा शांत किया जा सकता है इसलिए पेट की आग को समुद्र की आग से बड़ा बताया गया है।

(iii) **भाषा को सहूलियत** से बरतने का आशय है- सीधी, सरल एवं सटीक भाषा के प्रयोग से है। भाव के अनुसार उपयुक्त भाषा का प्रयोग करने वाले लोग ही बात के धनी माने जाते हैं। आडंबर रहित, सरलता और बिना किसी लाग -लपेट के कही गयी बात श्रोताओं एवं पाठकों दोनों को प्रभावित करने में सफल होती है।

8. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये:

(i) पतंग लुटने की प्रक्रिया में खतरनाक परिस्थितियों का सामना करने वाले बच्चे जीवन में नई चुनौतियों का सामना करना सीखते हैं, वे पहले से अधिक निडर हो जाते हैं तथा उनके अंदर आत्मविश्वास भी बढ़ जाता है। उसी प्रकार जीवन के लक्ष्यों को पाने की कोशिश में हम कई बार गिरते, फिसलते और निराश होते हैं फिर भी अपनी लगन कम नहीं होने देते अंततः हमें अपना लक्ष्य प्राप्त करने में सफलता हासिल होती है, उसी प्रकार जीवन के रणक्षेत्र में संघर्ष करने की प्रवृत्ति हमें सामान्यतया खेलों के माध्यम से ही प्राप्त होती है। पतंग उड़ाना एवं लूटना भी एक प्रकार का खेल ही है, जिसमें बच्चे विषम परिस्थितियों का सामना दृढ़ता से करके जुझारूपन पैदा करते हैं, यह जुझारूपन ही उनके जीवन को एक नई दिशा प्रदान करता है तथा जीवन में संघर्ष करने एवं अपनी सफलता के प्रति आश्वस्त होने की ललक पैदा करता है।

(ii) 'कैमरे में बंद अपाहिज' कविता निश्चित ही संवेदनहीन सूचना तंत्र पर एक तीखा व्यंग्य है। सामाजिक कार्यक्रम के नाम पर वे असहाय लोगों के दुःख-दर्द बेचने का काम करते हैं। उन्हें न अपाहिजों की संवेदना होती है और न उनके मान-सम्मान की चिंता। उनका उद्देश्य तो सिर्फ़ पैसा कमाना है। उनके द्वारा पूछे गए प्रश्न बेहद संवेदनहीन किस्म के होते हैं; जैसे-क्या आप अपाहिज हैं? आप क्यों अपाहिज हैं? अपाहिजपन दुःख तो देता होगा? अपाहिज होकर कैसा लगता है? आदि सवाल सूचना तंत्र की संवेदनहीनता को ही उजागर करते हैं।

(iii) कृषक चाहता है कि समाज में परिवर्तन आए। वह खुशहाली की आशा से अधीरता के साथ बादलों को बुलाता है। वह शोषण से मुक्ति की आशा मन में लिए हुए है।

9. **अनुच्छेद को ध्यानपूर्वक पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये:**

मेरा आदर्श समाज स्वतंत्रता, समता, भ्रातृता पर आधारित होगा। क्या यह ठीक नहीं है, भ्रातृता अर्थात् भाईचारे में किसी को क्या आपत्ति हो सकती है? किसी भी आदर्श समाज में इतनी गतिशीलता होनी चाहिए, जिससे कोई भी वांछित परिवर्तन समाज के एक छोर से दूसरे तक संचारित हो सके। ऐसे समाज के बहुविध हितों में सबका भाग होना चाहिए तथा सबको उनकी रक्षा के प्रति सजग रहना चाहिए। सामाजिक जीवन में अबाध संपर्क के अनेक साधन व अवसर उपलब्ध रहने चाहिए। तात्पर्य यह है कि दूध और पानी के मिश्रण की तरह भाईचारे का यही वास्तविक रूप है और इसी का दूसरा नाम लोकतंत्र है, क्योंकि लोकतंत्र केवल शासन की एक पद्धति ही नहीं है, लोकतंत्र मूलतः सामूहिक जीवनचर्या की एक रीति तथा समाज के सम्मिलित अनुभवों के आदान-प्रदान का नाम है। इनमें यह आवश्यक है कि अपने साथियों के प्रति श्रद्धा व सम्मान का भाव हो। (बाबा साहेब भीमराव आंबेडकर)

(i) **(ख)** गतिशीलता

व्याख्या:

गतिशीलता

(ii) **(क)** स्वयं की

व्याख्या:

स्वयं की

(iii) **(घ)** लोकतंत्र

व्याख्या:

लोकतंत्र

(iv) **(ग)** कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं तथा कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या करता है।

व्याख्या:

कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं तथा कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या करता है।

(v) **(ग)** i और ii

व्याख्या:

i और ii

10. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये:

(i) **पहलवान की ढोलक** कविता में चाँद सिंह नामक पहलवान को चित्त करने के बाद लुट्टन के जीवन में कई परिवर्तन आ गए। पहले वह एक क्रूर और लुटेरा पहलवान था जो अन्यायी कामों में लिप्त था। लेकिन जब उसे चित्त किया गया, वह अपने अन्यायी रास्तों से हटकर धर्म, सत्य और सेवा के मार्ग में प्रवृत्त हो गया। वह एक न्यायप्रिय, दानशील और समर्पित व्यक्ति बन गया और अन्यों की मदद करने के लिए तत्पर हो गया। इस प्रकार, चित्त करने के बाद उसके जीवन में प्रवृत्तियों और सोच के महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए।

(ii) भक्तिन के जीवन में शुरू से ही दुःखों ने डेरा डाला हुआ था। मायके में उसे विमाता (सौतेली माँ) ने विपरीत परिस्थितियों में डाले रखा। विवाह के बाद उसने तीन बेटियों को जन्म दिया, जिसके कारण ससुराल में सास तथा जिठानियाँ उसके साथ बुरा व्यवहार करती थीं। 36 वर्ष की आयु में

पति का भी देहांत हो गया, जिसके कारण ससुराल वालों ने उससे धन-संपत्ति छीनने की कोशिश की, पर वह संघर्ष करती रही। बड़े दामाद को उसने घरजमाई बनाया था, परंतु वह भी शीघ्र ही मृत्यु को प्राप्त हो गया। इस प्रकार उसका संपूर्ण जीवन दुःखों से ही घिरा रहा।

(iii) लेखक का मानना है कि शिरीष की डाल कुछ कमज़ोर जरूर होती हैं, पर इसमें झूलने वाली रमणियों (स्त्रियाँ) का वजन भी तो कम होता है। पुराने कवि कहते हैं कि बकुल (मौलसिरी) के पेड़ में ऐसा झूला लगाना चाहिए, जिसमें स्त्रियाँ आसानी से झूल सकें।

11. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये:

(i) लेखक ने पैसे को पावर कहा है क्योंकि यह क्रय-शक्ति को बढ़ावा देता है। इसके होने पर ही व्यक्ति नयी-नयी चीज़ें खरीदता है। दूसरे यदि व्यक्ति सिर्फ धन ही जोड़ता रहे तो वह इस बैंक-बैलेंस को देखकर गर्व से फूला रहता है। पैसे से समाज में व्यक्ति का स्थान निर्धारित होता है। इसी कारण लेखक ने पैसे को पावर कहा है।

(ii) i. अंधविश्वास मानना
ii. पानी के महत्व को समझना
iii. पानी की घोर कमी होना

(iii) डॉ. आंबेडकर का मानना है कि जन्म, सामाजिक स्तर, प्रयत्नों के कारण भिन्नता व असमानता होती है। समता एक काल्पनिक स्थिति है। इसके बावजूद वे सभी मनुष्यों को विकसित होने के समान अवसर देना चाहते हैं। वे समाज के सभी सदस्यों को आरम्भ से ही समान अवसर एवं समान व्यवहार उपलब्ध कराना चाहते हैं।

12. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये:

(i) **सिल्वर वैडिंग** कहानी वर्तमान युग में बदलते जीवन-मूल्यों की कहानी है। इस कहानी में यशोधर पंत प्राचीन मूल्यों के प्रतीक हैं। इसके विपरीत उनकी संतान नए युग का प्रतिनिधित्व करती है। दोनों पीढ़ियों के अपने-अपने जीवन मूल्य हैं। यशोधर के बच्चे वर्तमान समय के बदलते जीवन-मूल्यों की झलक दिखलाते हैं। नई पीढ़ी जन्म-दिन, सालगीरह आदि पर केक काटने में विश्वास रखती है। नई पीढ़ी तेज़ी से आगे बढ़ना चाहती है। इसके लिए वे परंपरागत व्यवस्था को छोड़ने में संकोच नहीं करते।

यशोधर बाबू परंपरा से जुड़े हुए हैं। वे सादगी का जीवन जीना चाहते हैं। संग्रह वृत्ति, भौतिक चकाचौंध से दूर, वे आत्मीयता, सामूहिकता के बोध से युक्त हैं। इन सबके कारण वे भौतिक संसाधन नहीं एकत्र कर पाते। फलतः वे घर में ही अप्रासांगिक हो जाते हैं। उनकी पत्नी बाहरी आवरण को बदल पाती है, परंतु मूल संस्कारों को नहीं छोड़ पाती। बच्चों की हठ के सम्मुख वह मॉडर्न बन जाती है। समय के साथ-साथ मूल्य भी बदलते जा रहे हैं।

(ii) दत्ता जी राव देसाई गाँव के सम्मानित जमींदार हैं। वे नेकदिल, उदार व रोबीले हैं। वे शिक्षा का महत्त्व भी समझते हैं। कभी लेखक के दादा उन्हीं के खेतों में काम करते थे वे राव साहब का सम्मान करते थे। लेखक ने अपनी माँ के साथ राव देसाई को अपनी पढ़ाई तथा पिता के रवैये के बारे में बताया। राव साहब ने उनकी बात सुनी तथा दादा को भेजने को कहा। जैसे ही दादा घर आए, लेखक की माँ ने उन्हें राव साहब के पास जाने का संदेश दिया। वहाँ पर राव साहब ने उसे

खूब डांटा। इस बीच दादा ने लेखक पर आवारागर्दी के आरोप लगाए जिनका उसने हिम्मत से जवाब दिया। राव साहब ने दादा को बच्चे को स्कूल भेजने के लिए कहा, साथ ही यह चेतावनी भी दी कि अगर वह उसे नहीं पढ़ाएगा तो वे स्वयं उसको पढ़ने का खर्चा देंगे। इस प्रकार लेखक की पढ़ाई में दत्ता का बहुत योगदान है।

(iii) हड़प्पा संस्कृति में न भव्य राजप्रासाद मिले हैं, न मंदिर, न राजाओं, महंतों की समाधियाँ। यहाँ के मूर्तिशिल्प छोटे हैं और औज़ार भी। मुअनजो-दड़ो 'नरेश' के सिर पर रखे मुकुट से छोटे सिरपेंच की कल्पना भी नहीं की जा सकती है। दूसरी जगहों पर राजतंत्र या धर्मतंत्र की ताकत का प्रदर्शन करने वाले महल, उपासना-स्थल, मूर्तियाँ और पिरामिड आदि मिलते हैं। यहाँ आम आदमी के काम आने वाली चीजों को सलीके से बनाया गया है। नगरयोजना, वास्तुकला, मुहरों, ठप्पों, जल-व्यवस्था, साफ-सफाई और सामाजिक व्यवस्था आदि में एकरूपता देखने मिलती है। शक्ति के प्रतीक के रूप में सैन्य हथियार के अवशेष कहीं नहीं मिलते, ऐसे कोई भी चिह्न नहीं मिले जिससे पता चले कि वे असभ्य या हथियार प्रेमी थे, इन आधारों पर विद्वान यह मानते है कि 'सिंधु-सभ्यता ताकत से शासित होने की अपेक्षा स्वयं अनुशासित सभ्यता थी।'